मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 8

MTT-045

सिंधी-हिन्दी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2022

एम.टी.टी.-045 : हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) समाचारों के शीर्षकों का महत्व समझाइए। उनके अनुवाद की चुनौतियों और समाधानों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

अथवा

(ख) हिंदी तथा सिंधी भाषा के बीच व्याप्त भाषाई विभेद के विविध आयाम और शब्दों के प्रयोग के स्तर पर होने वाली विभिन्न विसंगतियाँ सोदाहरण समझाइए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिन्दी में प्रयोग कीजिए : 10

पावती पूर्वानुमान अनिवार्य द्विभाषी सूचना

नियुक्ति संदर्भ गृह विभाग मुहावरे बिक्री

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

ऊन्हारो कणिक अर्ज़ी इंडलठि सुञाणप

गाल्हि तब्दीली माहताबु इश्तिहारु रिहाइशी

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 15

हिंदी शब्द	**सिंधी शब्द**
व्यवस्था	तर्जुमो
हस्तकला	हासिलात
संकलन	मयारी
निमंत्रण	तालीम
विशिष्टता	सुजागी

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 15×2=30

(क) राजदरबार में एक युवक आया, दरबारी चिल्ला उठे– "अरे, यह तो वही संन्यासी है जो उस दिन राजमहल के सामने गा रहा था। राजा ने पता किया– "यह युवक कौन है ?" युवक ने उत्तर दिया– "महाशय, मैं कवि हूँ।" राजकुमारी उस युवक को देखकर चौंक उठी। एक व्यक्ति ने कहा– "वाह! यह तो एक भिक्षुक है।" राजकवि बोल उठा– "नहीं, उसका अपमान न करो, वह कवि है।" चारों ओर सन्नाटा छा गया। महाराज ने कहा– "कोई अपनी कविता सुनाओ।" युवक आगे बढ़ा, उसने राजकुमारी को और राजकुमारी ने उसे देखा। युवक ने अपनी कविता सुनानी शुरू की। प्रत्येक चरण पर 'वाह-वाह' की ध्वनियाँ गूँजने लगीं। किसी ने ऐसी कविता आज तक न सुनी थी। युवक का मुख स्वाभिमान और प्रसन्नता से दमक उठा। अब महाराज ने राजकवि से कहा– "तुम भी अपनी कविता सुनाओ।" अनंगशेखर चेतना-शून्य-सा बैठा था। महाराज फिर बोले– "अनंगशेखर! किस चिंता में निमग्न हो ? क्या इस युवक-कवि का उत्तर तुमसे नहीं

बन पड़ेगा ?” यह अपमान कवि के लिए असहनीय था! वह अपने स्थान से उठा और आगे बढ़ा। हृदय खोलकर उसने अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रदर्शन किया। चारों ओर शून्यता और ज्ञान-शून्यता छा गई, श्रोता मूर्ति-से बनकर रह गए। महाराज ने राजसिंहासन से उठकर कवि को अपने हृदय से लगा लिया। कवि की यह अंतिम विजय थी।

(ख) डायरी को आम सजग साहित्यकार के रचनात्मक संघर्ष का इतिहास भी कह सकते हैं क्योंकि डायरी के माध्यम से एक साहित्यकार की रचना-प्रक्रिया की पड़ताल हो सकती है; स्वयं डायरी लेखक की निगाहों के साथ एक दस्तावेज के रूप में उसके परिवेश, उसकी मानसिक वृत्तियों और अंतर्क्रियाओं का दृष्टा बना जा सकता है। मोहन राकेश एक साहित्यकार थे लेकिन उनकी लिखी हुई डायरी मात्र ‘एक साहित्यिक की डायरी’ नहीं कही जा सकती। यह डायरी मोहन राकेश के जीवन के अनेक तथ्यों को सुरक्षित रखते हुए उनके व्यक्तित्व की अनेक परतों को उजागर करती है। कमलेश्वर ने डायरियों को आत्म-संघर्ष से इन्हीं अर्थों में

जोड़कर देखा है। मोहन राकेश की डायरी के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि—"राकेश की डायरियाँ आत्म-संघर्ष के सघन एकांतिक क्षणों का लेखा-जोखा है, जो वह किसी के साथ नहीं बाँट पाया या उसने बाँटना मंजूर नहीं किया .... आदमी के अकेलेपन की यह यात्रा अब और त्रासद हो जाती है, जब उसकी यात्रा में कुछ ठंडी और शीतल छायाएँ आती हैं। वे ठंडी शीतल छायाएँ जीवन के मरुस्थल को और बड़ा कर देती हैं और मन के सन्नाटे और सूनेपन को अधिक गहरा।" मोहन राकेश की डायरी 1948 से 1968 तक के कालखंड को अपने भीतर समेटती है। इस प्रस्तावना के साथ कि "जिस हवा में फूल अपने पूरे सौंदर्य के साथ नहीं खिल सकता, वह हवा अवश्य ही दूषित हवा है; जिससे समाज में मनुष्य अपने व्यक्तित्व का पूरा विकास नहीं कर सकता, वह समाज दूषित समाज है।"

(ग) नेक कार्य के लिए नीलामी : प्रधानमंत्री को भेंट किए गए स्मृति चिह्नों की ई-नीलामी का चौथा संस्करण 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर, 2022 तक आयोजित किया जाएगा; जिससे सभी को हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को उपहार में

भेंट किए गए कई ऐतिहासिक स्मृति चिह्नों के लिए बोली लगाने और जीतने का सुनहरा अवसर मिलेगा। खिलाड़ियों द्वारा भेंटस्वरूप दिए गए खेल के सामान से लेकर हमारे देश के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक स्मृति चिह्नों तक, प्रधानमंत्री को भेंट किए गए स्मृति चिह्नों की ई–नीलामी में सभी के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण यादगार वस्तुओं की एक समृद्ध सूची है। इन सभी प्रतिष्ठित स्मृति चिह्नों को नीलामी की तिथि के दौरान सुबह 11 बजे से शाम 6 बजे तक नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, जयपुर हाउस, नई दिल्ली में प्रदर्शित किया जाएगा। यह आम जनता के देखने के लिए भी खुला रहेगा। नीलामी में भाग लेने के लिए, 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक pmmementos.gov.in पर जाकर अपना पंजीकरण कीजिए और किसी भी सूचीबद्ध स्मृति चिह्न पर बोली लगाएँ। प्रधानमंत्री स्मृति चिह्न ई–नीलामी से आने वाली कुल आय का उपयोग 'नमामि गंगे कार्यक्रम' का सहयोग एवं विस्तार करने के लिए किया जाएगा, जिसे 2014 में गंगा नदी की सफाई, संरक्षण और कायाकल्प के लिए शुरू किया गया था। अंतिम तिथि 2 अक्टूबर, 2022 है।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) नईं आहे निति नाज़ वारनि जी ब॒ोली,
अदाउनि, इशारनि, निगाहुनि जी ब॒ोली।
न समझी सघियो को कोई इश्क़ धारां,
तमन्ना भरी नींहं वारनि जी ब॒ोली।
मिटीअ जे ज़रनि जो त कुझु राज सलि तूं,
ड॒ुखी नाहे समझण सितारनि जी ब॒ोली।
ख़िज़ां हालु ओरे त कंहिं साणु ओरे,
सभेई सिख्या जे बहारुनि जी ब॒ोली।
अला! इंए न थिए जो किताबनि में पढ़िजे
त हुई सिन्धु ऐं सिन्धु वारनि जी ब॒ोली।

(ख) हाणे बंगले में कुल छाहठि माण्हू हुआसीं। कचियूं ठहियल बाधरूम्स् ऐं कचा अड॒ियल रंधिणा ठाहे, हरको अधु कमरो वठी पंहिंजो कुटुम्बु संभाले रहियो हो। रात थींदे ई महफिल लग॒ंदी हुई। आखाणियूं, पहाका, राग॒, चरिचा, ब॒ारनि जूं मस्खरियूं ड॒िसी ऐं ब॒ुधी अबाणो वतनु छड॒ण जो दुखु हाल विसारे वेठासीं। ब॒ार त खैर बेखबर हुआ, पर वड॒नि जे दिलियुनि में रखी रखी सूओ चुभंदो रहंदो हो। साणेह जी का खबर, किथां को

सिन्धी लफ्जु या सिन्धीअ सां वाबस्ता गाल्हि बुधी, मन मां बिजलीअ जी धारा वही हलंदी हुई। महिनो-ब इएं ई गुजरियो। सभिनी पिए समझियो त इझो थो नियापो मिले त ठापर थी आहे, सुख सांत आहे, हाणे हलिया अचो; पर अहिड़ी खबर अचे छो थी ?

हाणे सभिनी आखेरो फिटाइण जी तयारी कई। फकत हिकु कुटुम्बु उते जोधपुर में ई रहियो। उन्हनि उते बसियुनि हलाइण जो धन्धो शुरू कयो, बाकी के दहिलीअ विया त के बम्बईअ। के बड़ोदे विया त किनि कलकत्ते में वञी नएं सिर जिंदगी शुरू कयाऊं। मुंहिंजा ब भाउर ऐं भेंण अञा पढ़िया पिए। बम्बई यूनीवर्सिटीअ जे कोर्स लाइ बड़ोदो पिण गंढिवलु हो, इन करे असीं बड़ोदे हली आयासीं।

ट्रेन में चढ़ण वक्ति इएं लगो जणि जीअरे हूंदे ई पंहिंजी जिंदगीअ जो मौत डिठो अथमि ऐं हाणि हिक अनजान जीवन जे बुंभे में बीठल आहियां।